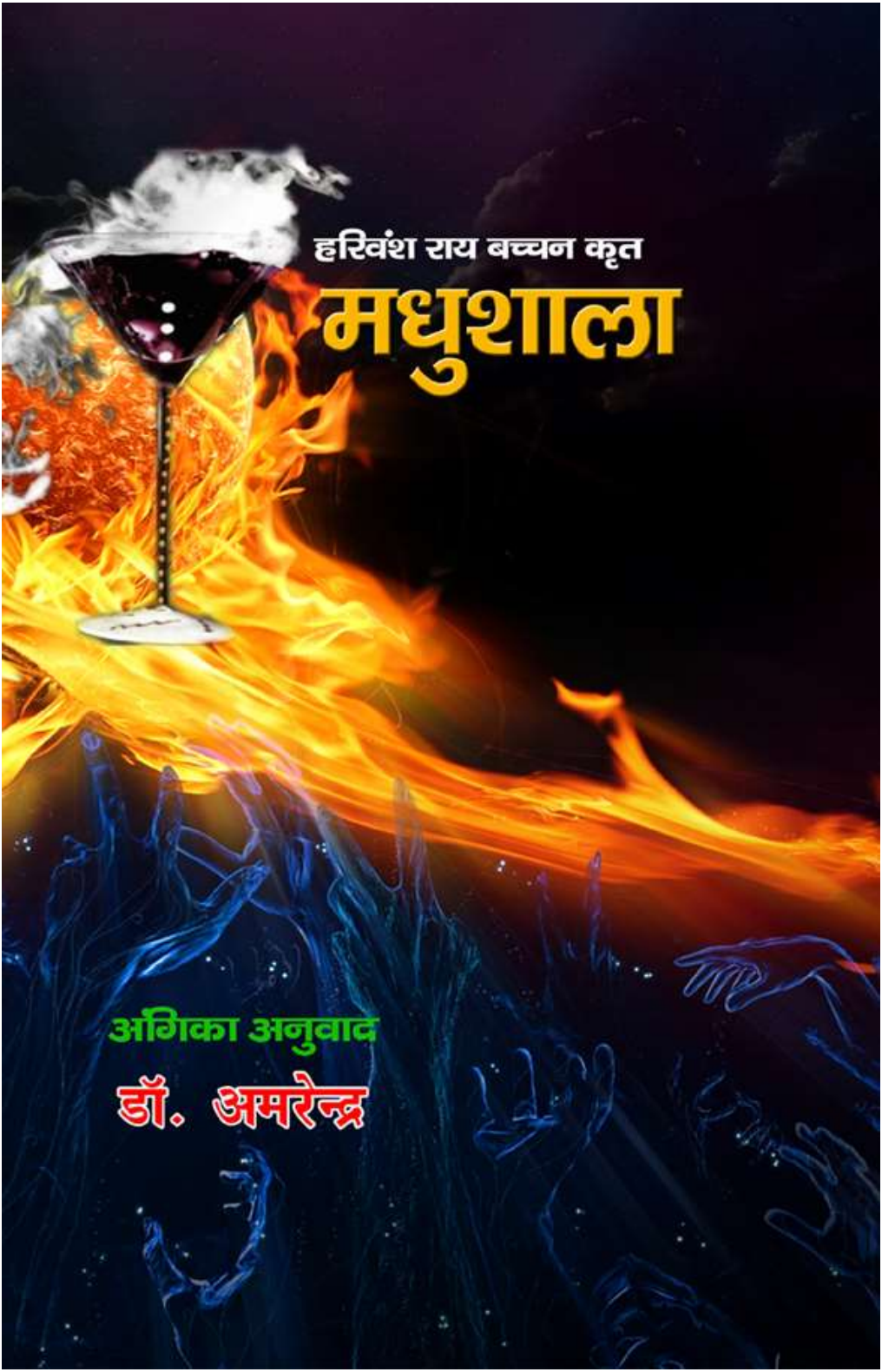
हरिवंश राय बच्चन कृत
मधुशाला
अंगिका अनुवाद
डॉ. अमरेन्द्र

मधुशाला

यह अनुवाद पटना (बिहार) से प्रकाशित मैग्निफिसेण्ट न्यूज (मार्च २०१०-२०१२ ई.) में धारावाहिक रूप में प्रकाशित ।

मधुशाला

कवि

हरिवंश राय बच्चन

अंगिका अनुवाद

डॉ. अमरेन्द्र

समीक्षा प्रकाशन
दिल्ली/मुजफ्फरपुर

ISBN : ९७८.८१.८७८५५.६३.७

प्रथम संस्करण
२०१५

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
समीक्षा प्रकाशन
जे. के. मार्केट, छोटी कल्याणी
मुजफ्फरपुर (बिहार)-८४२ ००१
फोन : ०९३४२७९९५७, ०९९०५२९२८०१
E-mail : samikshaprakashan@yahoo.com
www. samikshaprakashan.blogspot.com

दिल्ली कार्यालय
आर-२७, रीता ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-९२
फोन : ०९९११४७८६६८

रेखांकन
नागेश

शब्द-संयोजन
सतीश कुमार

मुद्रक
बी.के. ऑफसेट,
शाहदरा, दिल्ली।

मूल्य
२००.०० (दो सौ रुपये)

Madhushala By H. R. Bachhan
Angika Translation By Dr. Amrendra Rs. 200/-

हरिवंश राय बच्चन
के ई कृति
हुनकै समर्पित !

—अमरेन्द्र

मधुशाला

मीट्ठोॅ भाव रोॅ अंगूरोॅ के
आय करी ऐलौं हाला,
प्रीतम, अपने ठो हाथोॅ सें
आय पिलैबौं ऊ प्याला;
पहिलें भोग लगाय लौं तोरा
फेनू जग परसादी पैतै;
सबसें पहिलें तोरोॅ स्वागत
हमरोॅ करै ई मधुशाला । १

प्यास बुझैं, तें विश्व तपाय कें
जाय चुऐबै सब हाला,
एक गोड़ोॅ पर साकी बनलें
नाँची उठबै लै प्याला;
जिनगी रोॅ मधुरी तें तोरोॅ
ऊपर कहिये वारी देलौं,
आय निछावर करबै तोरा
पर जग केरोॅ मधुशाला । २

प्रीतम, तों हमरों हाला तें
तोरों छी प्यासा प्याला,
अपना कें हमरा में भरी कें
बनौ उठों पीयैवाला;
हम्में छलकौं तोरा छकी कें
मस्त तोहें पीवी हमरा,
इक दूसरा कें हम्में दोनों
आय परस्पर मधुशाला । ३

भावुकता अंगूर लतों सें
खिची कल्पना रों हाला,
कवि साकी बनलों ऐलों छै
भरी कें कविता रों प्याला;
कभी नै कण भर खाली होतै
लाख पीयौ, दू लाख पीयौ !
पाठक छेकै पीयैवाला
पुस्तक हमरों मधुशाला । ४

मधुर भावना केरों सुमधुर
रोज बनाबै छी हाला,
ई मधु सें ही भरौं आपनों
अन्तर रों प्यासा प्याला;
धरी कल्पना रों हाथों सें
ओकरा आपने पीवी जाँव;
अपनै में हम्में छी साकी
पीयौवाला, मधुशाला । ५

जाय लेली मदिरालय घर सें
निकलै छै पीयैवाला,
अनभुवार रं पथ खोजै में
ही छै ऊ भोलाभाला;
अलग-अलग पथ बतलाबै सब
हम्में ई बतलाबै छी—
'पथ पकड़ी कें चल्ले चल तों
पावी लेबे मधुशाला' । ६

चलै-चलै में कत्तें जिनगी
बीती रहलों छै आला,
'दूर अभी छै' बोलै सब्भे
पथ कें बतलाबैवाला;
हिम्मत नै छै आगू बढ़ियौं
नै हियाव पीछू हटियौं
असमंजस में डाली हमरा
दूर खड़ा छै मधुशाला । ७

बेछुट मूँ सें कहलें जा तों
मधु, मदिरा, मादक हाला,
हाथों में अनुभव करलें जा
एक ललित कल्पित प्याला,
ध्यान लगैनें जा तों सुमधुर
सुखदा सुन्दर साकी रों;
आरो बढ़ले ही जा राही
दूर नै लगतौं मधुशाला । ८

मदिरा-पीयै रों अभिलाषा
बनी जाय जखनी हाला,
ठोरों केरों आतुरतै में
दिखलाबें लागें प्याला,
ध्यानें करतें-करतें जखनी
साकी ठो साकार दिखें,
रहें नै हाला, प्याला, साकी
मिलथौं तभिये मधुशााला । ९

सुन, गिरतें कलकल, छलछल कें
मधुघट सें प्याला में हाला,
सुन रुनझुन कें, बाँटै छै मधु
बुली-बुली साकीबाला,
आबी गेलौ, दूर नै कुछुवो
चार कदम बस चलना छै;
सुन, चहकै छै पीयैवाला
महकै छै, ले, मधुशाला । १०

जलतरंग बाजै, जखनी लै
चुम्मा प्याला कें प्याला,
वीणा झंकृत होय रुनझुन सें
बुलै जबें साकीबाला,
मधु बेचवैय्या रों डाँटो तक
लगै पखावज जों बाजै;
मधु बोली सें मधुमादकता
आरू बढ़ाबै मधुशाला । ११

मेंहदी रचलों मृदुल हथेली
पर माणिक मधु के प्याला,
अंगूरी घुँघटा कें लेलें
कंचन रं साकीबाला,
पाग बैंजनी, जामा नीला
डटलों छै पीयैवाला;
पनसोखा सें होड़ लगाबै
आय रंगीली मधुशाला । १२

हाथों में आबै सें पहिलें
नखरा दिखलैतै प्याला,
ठोरों पर आबै सें पहिलें
भावो दिखलैतें हाला,
ढेरे तें इनकारो करतै
साकी आबै सें पहिले;
घबड़ैयों नैं राही, पहिलें
स्वागत करथौं मधुशाला । १३

धार लपट रं लाल सुरा कें
बोली बैठियो नै ज्वाला,
उफनैलों मदिरा ई छेकै
कहियौ नै मन रों छाला,
दर्द नशा ई मदिरा केरों
याद सिनी भुललों साकी;
पीड़ा में सुख जौनें पाबै
आबौ हमरों मधुशाला । १४

दुनियाँ के शीतल हाला रं
राही, हमरोॅ नै हाला,
जग के ठंडा प्याला रं नै
राही, हमरोॅ ई प्याला,
ज्वाल-सुरा जलतें प्याला में
दग्ध मनोॅ के कविता ई;
जरबोॅ सें भयभीत नै जे छै
आबौ हमरोॅ मधुशाला । १५

देखलौ बहतें हाला, देखोॅ
लपट उठैतें ई हाला,
आबें देखोॅ प्याला छूथैं
ठोर जरैयै दै वाला;
'देह दहें, पर ठोर बचें, आ
पीयै लें दू बूंद मिलें'—
हेनोॅ मधु रोॅ दीवाना कें
आय बुलाबै मधुशाला । १६

झोंकी देलकै धर्मग्रंथ सब
जेकरोॅ अन्तर के ज्वाला,
मंदिर, मस्जिद, गिरजा सबकें
तोड़लकै जे मतवाला,
पंडित, मोमिन, पादरियो के
फंदा जे काटी चुकलै,
करें सकै छै आय ओकरे
स्वागत हमरोॅ मधुशाला । १७

लालायित ठोरों सें जौनें
हाय, चुमलकै नै हाला,
हर्ष विकंपित हाथों सें जे
छुलकै नै मधु रों प्याला,
हाथ धरी लज्जित साकी रों
जे नगीच नै खींचलकै,
व्यर्थ सुखैलकै जीवन केरों
वैंनें मधुमय मधुशाला । १८

बनें पुजारी प्रेमी साकी
गंगाजल पावन हाला,
रहें फेरतें बेछुट गति सें
मधु रों प्याला के माला,
'आरो लै ला, आरो लै ला'
यही मंत्र रों जाप करें;
हम्में शिव रों मूरत होलौं
मंदिर ठो ई मधुशाला । १९

बजलै नै मंदिर में घंटा
नै मूर्त्तिये पर माला,
गेलै अपनों घोंर मुअज्जिन
दै कें मस्जिद में ताला
लुटलै सब्भे राज-खजाना
गिरलै गढ़ रों दीवारो;
रहें मुबारिक पीयैवाला
खुल्ले रहें ई मधुशाला । २०

बड़ों बड़ों परिवारो मिटलै
एक्को नै कानैवाला,
वहू महल सुनशान बनै छै
जहाँ कि नाचै सुरबाला,
राज भले उलटें राजा रों
भाग्य-लक्ष्मियो नी सूतें;
डटले रहतै पीयैवाला,
जमले रहतै मधुशाला । २१

मिटौक सब्भे, बनले रहतै
सुन्नर साकी, जम काला,
सूखौक सब रस, बनले रहतै
मतर हलाहल आ हाला,
धूमधाम आ चहल-पहल रों
जग्घो सब सुनसान बनें,
पर सद्धोखिन जगतै मरघट,
जगले रहतै मधुशाला । २२

बुरे सदा कहलैलै जग में
बाँका, मद-चंचल प्याला,
छैल-छबीला, रसिया साकी,
अलबेला पीयैवाला,
पटें कहाँ सें, मधुशाला आ
जग रों जोड़ी ठीक नै छै—
जग जर्जर तें हर दिन, हर खिन
मतर नवेली मधुशाला । २३

बिना पिलें जे मधुशाला कें
बुरा कहै, ऊ मतवाला,
पीला पर तें ओकरों मुँह पर
पड़िये कें रहतै ताला,
दास-द्रोही ई दोनों में छै
जीत-सुरा रों, प्याला रों;
विश्वविजयिनी बनी कें जग में
ऐली हमरों मधुशाला । २४

हरे-भरे रहतै मदिरालय
जग पर पड़ें भले पाला,
वहाँ मुहर्रम रों तम छावें
यहाँ होलिका रों ज्वाला,
स्वर्गलोक सें सीधे ऐलै
धरती पर दुख की जानै;
पढ़ें मर्सिया दुनियाँ सौंसे
ईद मनाबै मधुशाला । २५

एक साल में एक्के दाफी
यहाँ जलै होली-ज्वाला,
एक्के दाफी बाजी लागै,
जलै दियो केरों माला,
मजकि कोय दिन दुनियाँ वाला
आबी मदिरालय देखौ,
दिन कें होली रात दिवाली
रोज मनाबै मधुशाला । २६

के नै जानै, मनुख, बनी कें
ऐलों छै पीयैवाला
अनचिन्हार के साकी सें, जे
पोसै दूध के दै प्याला
नर जिनगी पावी, पीवी कें
मस्त रहें यै लेली ही
जग में आबी सबसें पहिलें
पैलकै वैनें मधुशाला । २७

बनले रहें अंगूर लता ई
जैसें निकलै ई हाला,
बनले रहें ऊ मिट्टी जैसें
खड़ा हुवै छै मधुप्याला,
बनले रहें ऊ मदिर पियासो
जे तृप्ति नै जानै छै,
बनले रहें ऊ पीयैवाला
बनले रहें ई मधुशाला । २८

कुशल बुझों हमरौ, जों रहतै
कुशल यहाँ साकीबाला,
मंगल आरो अमंगल समझें
की मस्ती में मतवाला,
साथी, हमरों खेम नै पूछों
पूछों तें मधुशाला रों,
कहलों करों नै 'जैराम' मिलथैं,
कहों यही 'जै मधुशाला' । २९

सूर्य बनें मधु के बेचबैया
सिन्धु बनें घट, जल हाला,
मेघ बनी कें आबें साकी
भुइयाँ मधु केरों प्याला,
झड़ी लगाय कें बरसें मदिरा
रिमझिम, रिमझिम, रिमझिम रं,
टूसों, दुबड़ी बनी कें पीयौं,
बरसा के रितु—मधुशाला । ३०

तारा-मणि सें सजलों नभ ठो
बनी उठें मधु रों प्याला,
सीधा करी भरैलों जाय ऊ
सागर केरों जल हाला,
हवा मातलों बनी कें साकी
ठोरों पर जाय छलकैलें,
सागर पाटों रं जे चौड़ा
विश्व बनें ई मधुशाला । ३१

ठोरों पर कोय्यो रस उभरें
लगें मतर जी कें हाला,
हाथों में कोय्यो बरतन ऊ
लगें राखले छै प्याला,
हर सूरत साकी-सूरत में
बदली कें ही आबै छै,
आँखों रों आगू में कुछुवो
आँखों में छै मधुशाला । ३२

पौधा आय बनी छै साकी
लै-लै फूलों रों प्याला,
भरलों होलों जिनकों भीतर
परिमल-मधु-सुरभित हाला,
भौरो के दल माँगी-माँगी
रस रों मदिरा पीयै छै,
झूमै, झपकै मोंद मतैलों
उपवन की छै—मधुशाला ! ३३

गाछ रसीला सब साकी रं
जानों मंजर कें प्याला,
छलकै छै जेकरा सें बाहर
मादक गंधों रों हाला,
पीबी जे मतवाली कोयल
कूकै छै डाली-डाली,
सब वसन्त में अमराई में
जागी जाय छै मधुशाला । ३४

मंद झकोरों के प्याला में
मधुरितु के सौरभ-हाला,
शीतल पवन पिलाबै भरी-भरी
बनी मर्दो सें मतवाला,
लब्बों हरका पत्ता, गाछो
नैका डाली, लोंत सिनी,
छकी-छकी कें झूमै झुकलों,
मधुवन में छै मधुशाला । ३५

साकी होय आबै छै भोरे
जबें अरुण ऊषा बाला,
तारा-मणि मढ़लों चादर दै
मोल में लै धरती हाला,
अनगिन किरणों के हाथों सें
जे पीबी चिड़ियाँ पागल;
रोज भोररियाँ खुला प्रकृति में
मुखरित होबै मधुशाला । ३६

उतरी ओकरों जाय नशा तें
आबै छै संझा बाला,
बड़ी पुरानों बड़ी नशीला
ढाली जाय रोजे हाला,
जिनगी रों संताप-शोक सब
एकरा पीथैं नाश हुऐ;
नीन माँतलों मदलोभी पर
रहै जागथैं मधुशाला । ३७

अंधकार मधु बेचबैया तें
सुन्नर साकी शशिबाला,
किरिन-किरिन में जे छलकाबै
जाम जम्हाई रों आला,
पीवी जेकरा झपकी लै छै
होश-हवासो कें छोड़ी—
ताराहै सन पीयैवाला
रात, जना कि मधुशाला । ३८

कोनो दिश आँखी कें फेरौं
दिखलाबै छै बस हाला,
कोनो दिश ही नजर खिड़ाबौं
दिखलाबै छै बस प्याला,
कोनो दिश देखौं हमरा तें
दिखलाबै छै बस साकी,
कोनो दिश देखौं, दिखलाबै
हमरा तें बस मधुशाला । ३९

साकी बनी कें मुरली ऐलै
हाथों में लै कें प्याला,
जैमें छलकैतें आनलकै
अधर-सुधा-रस रों हाला,
योगिराज करी संगत ओकरों
नटवर नागर कहलैलै;
देखों, केन्हों-केन्हों कें छै
नाच नचाबै मधुशाला । ४०

मधु बेचबैया वादक बनलें
आनलकै मीट्ठों हाला,
बनी रागिनी साकी ऐलै
भरलें तारा रों प्याला,
बेचबैया रों संकेतों पर
धैलें लय, आलापों में
पान कराबै सुनबैया कें;
झंकृत वीणा मधुशाला । ४१

चित्रकार बनी साकी आबै
लै कें कूची रों प्याला,
जैमें भरलें पान कराबै
ढेरे रंग-रस के हाला,
मन-तस्वीर पिवी कें जकरा
रंग-बिरंगा रं होबै,
चित्रपटी पर नाच करै छै
एक मनोहर मधुशाला । ४२

कारों मेघ अंगूरे लत-रं
आनै खिंची-खिंची हाला,
लाल कमल के कोमल कली के
प्याली, फूलों रों प्याला,
बनी-बनी साकी हिलकोरा
माणिक मधु सें भरी दै छै,
हंस मतैलों—पीवी-पीवी
मानसरोवर मधुशाला । ४३

बरफ-पाँत अंगूर लता-सन
बरफों केरों जल—हाला,
चंचल नद्दी साकी होलें
भरलें लहरों के प्याला,
पाटों के कोमल हाथों सें
छलकैलें दिन-रात चलै,
पीवी खेत खड़ा लहराबै
भारत पावन मधुशाला । ४४

आय दिखाबै धीर पूत रों
लहू करेजे-रं हाला,
वीर पूत रों मूड़ी-सन टा
हाथों में लै कें प्याला,
खूब उदारो, दानी साकी
बनली छै भारतमाता,
प्यासी काली-रं आजादी
मलकाठों-रं मधुशाला । ४५

दुतकारकों मस्जिद नें हमरा
बोली—है पीयैवाला,
होनै कें ही ठाकुरबाड़ीं
देखी हाथों में प्याला,
कहाँ ठिकानों पैतै जग में
भला अभागा काफिर ई
शरणस्थली-रं जों हमरा
नै अपनैतियै मधुशाला । ४६

घूमौं हम्में राही-रं ही
मिलै सभै ठां छै हाला,
सब ठां छै हासिल साकीयो
सब ठां हासिल छै प्याला,
हमरा ठहरै लेली साथी
कहूँ कष्ट जरियो टा नै,
मिलें नै मन्दिर, मिलें नै मस्जिद
मिलिये जाय छै मधुशाला । ४७

सजै नै मस्जिद, आर नमाजी
बोले छै अल्लाताला
सजी-धजी, पर साकी आबै
बनी-ठनी पीयैवाला,
शेख कहाँ सें तुलना होतै
मस्जिद के मदिरालय सें
जन्मजात राँढे-रं मस्जिद
सदा सुहागिन मधुशाला । ४८

बजलै तुरही आर नमाजी
भुललै सब अल्लाताला,
गिरलै गाज सुरै सें सटलों
मगन छिलै पीयैवाला,
शेख, बुरा नै मानों ई तें
साफ कहै छी मस्जिद कें
युग-युग तक सिखलैतै आभी
ध्यान लगैबों मधुशाला । ४९

मुसलमान आ हिन्दू—दू छै
एक मतर, हुनकों प्याला,
एक मतर हुनकों मदिरालय
एक मतर, हुनकों हाला,
जब तक एक रहै नै दोनों
मस्जिद-मन्दिर में गेलों;
वैर बढ़ाबै मस्जिद-मन्दिर
मेल कराबै मधुशाला । ५०

कोय्यो होवें शेख-नमाजी
या पंडित जपतें माला,
वैर-भाव कत्तो ऊ होएँ
मदिरा सें रक्खैवाला,
एक बार बस मधुशाला रों
आगू सें होय कें निकलौ,
देखौं कना नै थामी लै छै
दामन ओकरों मधुशाला । ५१

आरो रस में स्वाद तभै तक
दूर जभै तक छै हाला,
इतराबौ सब पात्र, नै जबतक
आगू आबै छै प्याला
पूजा कै लौ शेख-पुजारी
तब तां मस्जिद-मन्दिर में,
घूंघट रों पट खोली जब तांय
झाँकै नै छै मधुशाला । ५२

आय करौ परहेज ई दुनियाँ
कल तें पीनै छै हाला,
आय भले इन्कार करौ जग
कल तें पीनै छै प्याला,
होएँ दौ पैदा दुनियाँ में
मद रों कोय महमूद फनू
जहाँ अभी छै मन्दिर-मस्जिद
वहाँ दिखैतै मधुशाला । ५३

जग्गों रों आगिन-रं धधकै
मधु के भट्टी रों ज्वाला,
रिखि-रं ध्यान लगैनें सब्भे
बैठलों छै पीयैवाला,
मुनि-कन्या-रं मधुघट लै कें
घूमै छै साकीबाला,
कोय तपोवन सें की कम छै
हमरों पावन मधुशाला । ५४

सोम-सुरा पुरखां सब पीयै
जेकरा बोलै छी हाला,
द्रोणकलश जे कभी कहाबै
आय वही मधुघट आला,
वेद-विहित ई रस्म नै छोड़ों
ठिकेदार सब वेदों के,
ई तें पुजैतैं ऐलै युग सें
नया तें नै छै मधुशाला । ५५

वहें वारुणी सागर मत्थी
ऐलै जे आबें हाला
रम्भा रों संतान जगत में
कहलाबै साकीबाला
जे देवें-दानव लै ऐलकै,
साधू-संतें खतमैतै !
कै में कत्तें दम-खम ई सब
खुब्बे समझै मधुशाला । ५६

कभियो कहाँ सुनैलै—'वैनें
छुलकै हा, हमरोॅ हाला'
कभी नै कोय्यो बोलै 'वैनें
जुट्ठोॅ कै देलकै प्याला',
कोन जात के लोग यहाँ पर
पीयै साथ नै बैठी कें;
सओ सुधारक के असकल्ले
काम करै छै मधुशाला । ५७

श्रम, संकट, संताप सभे टा
भूलै छौ पीवी हाला,
सबक बड़ोॅ सीखी चुकलौ, जों
सिखलौ रहबोॅ मतवाला,
हरिजन कथी लें होय लें चाहोॅ
तों तें मधुजन ही अच्छा;
ठुकराबै हरि-मंदिरवाला
पलक बिछाबै मधुशाला । ५८

एक किसिम सें सब रोॅ स्वागत
करै यहाँ साकीबाला,
की अन्तर मुरखोॅ-पंडित में
होय गेला पर मतवाला,
रंक-राव में भेद नै होलै
कभियो भी मदिरालय में,
साम्यवाद रोॅ प्रथम प्रचारक
छेकै हमरोॅ मधुशाला । ५९

हर दाफी हम्मीं होय आगू
माँगलियै नै जों हाला,
यैसें बुझियों नै हमरा छी
हल्का-सन पीयैवाला,
नया-नया संकोच जरा ई
दूर हुऍं तें दौ साकी;
फेनू हमरे सुर सें सौंसे
गूंजी उठतै मधुशाला । ६०

कलकों पर विश्वास करलकै
कहियो की पीयैवाला,
हुऍं सकें कल हाथे जड़ ऊ
जैसें आज उठै प्याला,
आय हाथ में ऐलों, गेलै,
कलकों कोंन भरोसों छै;
कलकों के मधुशाला चाहै
काल कुटिल रों मधुशाला । ६१

औसर जों मिललों छै आय तें
छकबै जीह भरी हाला,
मौका जों मिललों छै आय तें
ढारी लौं जी भर प्याला,
छेड़-छाड़ अपनों साकी सें
खूब अघैलों आय करौं,
एक्के दाफी तें मिलना छै
जीवन रों ई मधुशाला । ६२

प्रेयसि, आय बनाबों जीत्तों
अपनों ठोरों के प्याला,
भरों-भरों टापेटुप यैमें
यौवन-मधुरस के हाला,
फेनू हमरों ठोरों पर दै
भूली जैयों हटबै लें,
बेछुट पीयैवाला बनियौं
खुलें प्रेम रों मधुशाला । ६३

सुमुखि, तोरों सुन्दर मुखड़े
हमरा लें कंचन-प्याला,
छलकै जै में माणिक केरों
रूप - मधुर - मादक - हाला,
साकी बनौं नै खाली हम्में
पीयैवाला भी हम्मीं,
जै ठां बैठौं हम्में-तोहें
वहीं बुझों बस मधुशाला । ६४

मधु पिलाय कें हमरा दू दिन
उबलों छै साकीबाला,
भरै, भरी खिसकाय देलखौं
हमरों दिश आगू प्याला,
नाज, अदा, अन्दाजों सें ऊ
हाय पिलैबों खतमैलै,
आबें करै, करै बस खाली
फर्जअदाई मधुशाला । ६५

छोटों रं जिनगी में कत्तें
प्यार करौं, पीयौं हाला,
आबै के साथैं दुनियाँ में
कहलैलौं जावैवाला,
स्वागत साथें विदागिरी के
होतें देखौं तैयारी,
बंद हुएँ लगलै खुलथैं ही
हमरों जिनगी-मधुशाला । ६६

की पीबों, निर्द्वन्द्व बनी नै
लेलकों प्याला पर प्याला,
की जीवों, ई तय नै जब तां
साथ रहें साकीबाला,
डोंर हेराबै के लगलों छै
पावै रों सुख के पीछू,
कहाँ मिलन रों सुख दै पारै
मिलियो कें भी मधुशाला । ६७

हमरों पीयै लें लैलें छों
की इत्ती टा ई हाला !
हमरा तोंय दिखाबै लेली
लैलें छों छिछला प्याला !
इतनी टा पीयै सें अच्छा
सागर के लै प्यास मरौं,
सिन्धु प्यास-रं हमरों मजकि
बूंद भरी छै मधुशाला । ६८

की बोलै छौ—बचलों नै छै
तोरों बरतन में हाला,
की बोलै छौ—अब नै चलतै
मादक प्याला रों माला,
उपटै प्यास कटी टा पीवी
तें बचलै नै पीयै लें;
प्यास बुझाबै के नेतों दै
प्यास बढ़ाबै मधुशाला । ६९

लिखलों जत्तें भागों में बस
ओत्ते टा मिलथौं हाला,
लिखलों भागों में जेन्हों बस
होने टा पैबा प्याला,
कत्तो पटकों हाथ-गोड़, पर
कुछुवो नै यैसें होथौं,
जे भागों में लिखलों तोरों
होने मिलथौं मधुशाला । ७०

करों-करों कंजूसी तोहें
हमरों पीयै में हाला,
दै ला, दै ला हमरा तोहें
ई भंगा-फुट्टा प्याला,
हमरा सब्र यही पर लेकिन
तोहें पीछू पछतैबा;
जखनी नै रहबै तें हमरा
खूब सुमिरतै मधुशाला । ७१

मानों-अपमानों के ध्याने
छोड़ी देलां—लै हाला,
गौरव भुललौं हाथ में ऐलै
जहिया सें मिट्टी प्याला,
साकी केरों नखरा भरलों
झिड़की में अपमाने की,
दुनियाँ भर के ठोकर खैलां
तें पैलें छी मधुशाला । ७२

क्षीण, क्षुद्र, क्षणभंगुर, दुर्बल
नर तें मिट्टी रों प्याला,
भरलों होलों जेकरों भीतर
कटु-मधु जिनगी रों हाला,
साकी निठुर बनी मिरतू छै
फैलैलें सौ हाथों कें !
काल प्रबल तें पीयैवाला
दुनियाँ छेकै मधुशाला । ७३

हमरा प्याले-रं गढ़ी कोय्यों
ढारलकै जीवन-हाला,
नशां सुहैलै नै, ढारलियै
लै, लै कें मधु रों प्याला;
जखनी उपटै जिनगी रों दुख
रहौं दबैले प्याला सें;
दुनियाँ रों पहिलों साकी सें
भिड़लों होलों मधुशाला । ७४

अंगूरों रों अपनों तन में
हम्में भरलें छी हाला,
बोलै शेख 'नरक में हमरा
खूब तपैतै ही ज्वाला',
तब तें मदिरा खूब खिंचैतै
आरो पीतै भी कोय्यो,
हमरा नरकों के ज्वाला में
साफ दिखैतै मधुशाला । ७५

लै लें ऐतैं जम्में जखनी
चलबै टानी कें हाला,
नरकों के पीड़ा, कष्टों कें
की बुझतै ई मतवाला,
पत्थर दिल, कुविचारी, कुटिलो
अतिचारी जमराजों के,
जखनी पड़तै मार डाँग के
करतै आड़ों मधुशाला । ७६

जों ई ठोरों सें दू बाते
प्रेमों के बोलै हाला,
जों खलिया हाथों के जी कें
बहलाबै पल भर प्याला,
जग रों यैमें हानि कहाँ छै
की लें हमरा बदनामौ;
हमरों टुटलों दिल के छेकै
एक खिलौना मधुशाला । ७७

सुध नै आवें दुखमय जिनगी
यैलें पीबी लौं हाला,
चिन्तामुक्त रहै लें ही जग
थामी लै छै ई प्याला,
शौक, समादों, इच्छौ खातिर
दुनियां पीयै छै मदिरा;
पर हम्में ऊ रोगी जेकरों
एक दवा छै मधुशाला । ७८

रोज-रोज गिरले ही जाय छै
प्रणयिनि, प्राणों रों हाला,
रोजे-रोज भाङ्गले जाय छै
सुभगी, हमरों तन-प्याला,
रुपसि, रूठै छै हमरा सें
रोज जवानी रों साकी,
रोज-रोज सूखै छै, सुनरी
हमरों जीवन मधुशाला । ७९

जम ऐतै जे साकी बनलें
साथें लै करिया हाला,
पीबी नै होशों में ऐतै
मधु सें बेसुध मतवाला,
ई अन्तिम बेहोसी, अन्तिम
साकी, अन्तिम प्यालाहौ;
राही पीयों प्यार सें एकरा
कहाँ फनू ई मधुशाला । ८०

ढलकी रहलों तन रों घट सें
जबकि छै जीवन-हाला,
गरलपात्र कें लै कें जबकि
साकी छै आबैवाला,
प्याला पकड़ै के सुख गेलै
सुरा-स्वाद भुललै जीहो,
कानों में कहतें रहियों तोंय
मधुकण, प्याला, मधुशाला । ८१

हमरों ठोरों पर अन्तिम में
तुलसी-दल नै, बस प्याला,
हमरों जीहा पर अन्तिम में
गंगा जल नै, बस हाला,
हमरों ठठरी संग चलवैया
याद यही रखियों अतनै—
'राम नाम सत' केरों बदला
कहियों 'सच्चा मधुशाला' । ८२

हमरों 'ठठरी' पर ऊ कानै
जेकरों लोरों में हाला,
आह भरें ऊ जे छै सुरभित
मदिरा पीबी मतवाला,
वैं ही कंधा दौ जेकरों कि
गोड़ निशांव सें डगमग-डग,
जलौं वही ठां जैठां कहियो
रहलों छेलै मधुशाला । ८३

आरो सारा पर उलटैयों
घी-बरतन बदला प्याला,
घंट बँधें अंगूरलता में
नीरों के नै, दै हाला,
प्राणप्रिय, जों श्राद्ध करों तोंय
हमरों, तें हेनों करियों—
पीयैवाला कें बुलवाय कें
खुलबैयों तोंय मधुशाला । ८४

नाम अगर जों पूछै कोय्यो
कहियो बस पीयैवाला,
काम ढालबों, ढलबैबों बस
सब्भे कें मदिरा-प्याला,
जात अगर जों पूछै कोय्यो
कहियौ, बस दीवाना रों,
धरम बतैयों प्याला केरों
माला जपबों मधुशाला । ८५

जानलकै जम आबैवाला
लै अपनों करिया हाला,
पंडित अपनों पोथी भुललै,
साधू तक भुललै माला,
भुललै पूजा-पाठ पुजारी
ज्ञानी सबटा ज्ञानों कें,
मतर कहाँ भुललै मरियो कें
पीयैवाला मधुशाला । ८६

अगर चलै छै जम लै हमरा
चलै दहौ लै कें हाला,
साथ चलें दौ साकी कें भी
हाथों में लै कें प्याला,
स्वर्ग-नरक जैठां जी चाहौं
लै जा हमरा वैठां ही;
सब जग्घों तें एक्के रं छै
साथ रहें जों मधुशाला । ८७

पीवों पाप अगर जों छेकै
तें तीनो—साकीबाला,
रोज पिलाबैवाला प्याला,
जी पर जे उतरै हाला;
हमरों साथें एकरो लै जा
न्याय यही बतलाबै छै,
कैदी जैठां हम्में, वै ठां
कैद रहें ई मधुशाला । ८८

साकी, केकरों ठंडा होलै
पीवी कें मन के ज्वाला,
'आरो, आरो' के रटबों कें
छोड़ै नै पीयैवाला,
कत्तें-कत्तें किंछा छोड़ै
जे कोय्यो जाबैवाला !
कत्तें अरमानों के कब्बर
बनी खड़ा छै मधुशाला । ८९

जे हाला ठो चाहै छेलौं
पैलां नै हौ ठो हाला,
जे प्याला ठो माँगै छेलां
पैलां नै ऊ ठो प्याला,
जे साकी रोॅ पीछू हम्में
दीवाना, नै मिलतै ऊ,
जेकरोॅ पीछू छेलां बेमत
पैलां नै ऊ मधुशाला । ९०

देखै छी अपनोॅ आगू में
कहिये सें माणिक-हाला,
देखी रहलौं अपनोॅ आगू
कहिये सें कंचन-प्याला,
'आबेॅ पैलौं !' कहलेॅ दौड़ौं
कहिये सें एकरोॅ पीछू,
मतर सरंग-रं दूरे रहलै
हमसें हमरे मधुशाला । ९१

कखनू रात हताशा के छै
जैमें गुम मधु रोॅ प्याला,
तखनी कहाँ मधु रोॅ आभा
गुम होबै साकीबाला,
कखनू आस-उजास करी केॅ
प्याला केॅ छै चमकाबै,
आँखमिचौनी हमरै सें ही
खेलै हमरोॅ मधुशाला । ९२

'आगू आवोॅ' कही कें पीछू
हाथ करें साकीबाला,
ठोर लगाबै लें कहियो कें
हटकाबै हरदम प्याला;
नै मालूम कहाँ तक हमरा
यैं हमरा कें लै जैतै,
आगू करी-करी कें हमरा
पीछू हटकै मधुशाला । ९३

हाथोॅ में आवै-आवै सें
पहिलैं फिसलै छै प्याला,
ठोरोॅ पर आवै-आवै में
पहिलैं ढुलकै छै हाला;
दुनियाँवाला, आवी हमरोॅ
किस्मत रोॅ खूबी देखोॅ,
रही-रही जाय बस हमरै ही
मिलतें-मिलतें मधुशाला । ९४

मिलनै नै छै, तें कैन्हें नी
होय अलोपित छै हाला,
मिलनै नै छै, तें कैन्हें नी
होय अलोपित छै प्याला,
दूरो नै कि हिम्मत हारौं
पासो नै कि पावी लौं;
बेरथ ही दौड़ाबै हमरा
मरु में मृगजल मधुशाला । ९५

मिलै नै जों, ललचाबै कैन्हें
बेकल बड़ी करै हाला,
मिलें नै जों, तरसाबै कैन्हें
आ तड़पाबै छै प्याला,
हाय, भाग्य रों क्रूर लेखनी
माथा पर ई खोदलकै—
''दूरे रहतै मधु रों धारा
भले नगीचे मधुशाला ।'' ९६

कखनी सें छी मदिरालय में
नै मिललै अब तांय हाला,
बड़ी जतन सें भरौं, मतरकि
कोय्यो उलटी दै प्याला,
आदम रों ताकत के आगू
भाग्य निबल—सुनतें ऐलौं,
भाग्य प्रबल निर्बल मनुखों रों
पाठ पढ़ैबै मधुशाला । ९७

किस्मत में जों खाली खप्पर
की खोजै छेलां प्याला,
ढूढ़ै छेलां मृगनैनी कें,
किस्मत में तें मृगछाला,
कौनें अपनों भाग्य बुझै में
हमरे-रं धोखा खैलकै;
किस्मत में तें औघट-मरघट
खोजै छेलां मधुशाला । ९८

ऊ प्याला कें चाहौं, जे छै
दूर तरत्थी सें प्याला,
ऊ हाला सें चाव बड़ी छै
दूर अधर सें जे हाला,
प्यार मिली जैबों में नै छै
पाबै रों अरमानों में,
पाबी लेतियै, तें एतना नै
कभी सुहैतियै मधुशाला । ९९

साकी केरों पास तनी-टा
श्री, सुख, सम्पत रों हाला,
सौंसे जग पीयै लें आतुर
लै-लै किस्मत रों प्याला,
कुछ आगू छै ठेली-ठाली
ढेरे तें दबिये मरलै;
जिनगी रों संघर्ष नै छेकै
भीड़ ठसाठस मधुशाला । १००

साकी तोरों पास जबें छौं
एतनै थोड़ों टा हाला,
कैन्हें पीयै रों किंछा सें
करौ सभै कें मतवाला,
हम्में हाय पिसैलों बेदम
तोहें छिपलों मुस्काबों;
दुःख छै, हमरे ठो पीड़ा सें
खेल करै छै मधुशाला । १०१

साकी, मरी-खपी कोय्यो जों
आगू आनलकै प्याला,
पीएँ पारलै दू बूंदों सें
ज्यादा नै तोरों हाला,
जिनगी भर रों हाय परिश्रम
लूटी गेलै दू बूंदें;
भोले मनुखों कें ठग्गै लें
ही बनलों छै मधुशाला । १०२

जे हमरा प्यासे राखलकै
बनले रहौ वहू हाला,
जे जिनगी भर दौड़ैलें छै
बनले रहें वहू प्याला;
मतवाला रों जी सें कहियो
निकले नै छै शाप कहीं,
दुःखी बनैलें छै जें हमरा
सुखी रहौ ऊ मधुशाला ! १०३

नै चाहे छी, आगू बढ़ी कें
छीनी लौं केकरो हाला,
नै चाहै छी, धक्के दै कें
छीनी लौं केकरो प्याला,
साकी हमरों ओर नै देखौ
हमरा तनिक मलालो नै,
एतनै की कम छै आँखी सें
देखी रहलौं मधुशाला ! १०४

सुनिये कें हाला, मद, मदिरा
जों एत्तें छी मतवाला,
की गति होतै जों ठोरों के
नीचें में ऐतै प्याला,
साकी हमरों लुग नै अइयों
पगलैबों हम्में तय छै,
प्यासले हम्में मस्त, तोरों ई
तोरहै मुबारक मधुशाला ! १०५

हमरा भला जरूरत की छै
साकी सें माँगौं हाला,
हमरा भला जरूरत की छै
साकी सें चाहौं प्याला,
मस्तैलौं जों पिविये मदिरा
प्यार की करलां मदिरा सें !
हम्में तें बेमत एतनै सें
नाम सुनी लौं मधुशाला । १०६

हमरा दै लें ही बोललकै
लेकिन की देलकै हाला,
दै के तें बोललकै हमरा
लेकिन की देलकै प्याला,
समझी मनुखों के कमजोरी
कुछुवे नै बोलौं हम्में,
मजकि आबें देखी हमरौ
खुदे लजाबै मधुशाला । १०७

बहुत अघैलों कभियो हम्में
थोड़े टा पाबी हाला,
भोला-रं हमरों साकी तें
छोटों रं हमरों प्याला,
हमरों छोटों-रं दुनियाँ के
स्वर्ग बलैया लै छेलै,
हाय, हेरैलै बड़का जग में
हमरों नान्हों मधुशाला । १०८

पैलौं ढेरे मदिरालय कें
आरो ढेरे सन हाला,
किसिम-किसिम के ऐलै हमरों
हाथों में मधु रों प्याला,
एक-एक सें बढ़ी-चढ़ी कें
सुन्नर साकी आदरकै,
जँचले नै आँखी कें कोय्यो
पहिलों-नाँखी मधुशाला । १०९

एक समय पर छलकै छेलै
हमरों ठोरों पर हाला,
झुमलों करै, समय इक छेलै
हमरों हाथों पर प्याला,
एक समय पीबैया, साकी
गला मिलै, आलिंगन लै;
आय दिखै छी निर्जन, मरघट
एक समय में मधुशाला । ११०

दिल के भट्टी सुलगैलौं तें
खिंचलौं लोरों के हाला,
छलछल छलकै सद्दोखिन ही
यैसें पलकों रों प्याला,
नैन आय बनलों छै साकी
गाल गुलाबी पीयै रं,
विरही कहों नै हमरा, हम्में
चलतें-फिरतें मधुशाला ! १११

रंग बदलै छै कत्तें अपनों
जल्दी सें चंचल हाला,
घिसी जाय छै कत्तें जल्दी
हाथों में आबी प्याला,
कत्तें जल्दी साकी केरों
आकर्षण ठो घटै यहाँ;
भोररिया हेनों नै दिखलै
रात रहै जे मधुशाला । ११२

बूँद-बूँद लें कभियो तोरा
तरसैतें रहतौं हाला,
कभी छिनैतौं हाथे सें ही
तोरों ई मादक प्याला,
सुनों पिबैया, साकी केरों
मीट्ठों बात में नै ऐयों;
हमरो गुण हेनै कें कभियो
गाबै छेलै मधुशाला । ११३

छोड़ी कें सब पंथ-मतों कें
कहलैलों छी मतवाला,
गोड़ धोय लें बढ़लै मदिरा
फोड़लियै जेन्हैं प्याला,
तभिये मानी मधुशाला ई
हमरो पीछू आय फिरै,
की कारण छै ? छोड़ी देलां
हम्में जैबों मधुशाला । ११४

ई नै बुझों कि पीलौं माहुर
यैलें, नै मिललों हाला,
तखनी खप्पर कें अपनैलौं
जखनी लै सकतौं प्याला;
सुझलै जरलों हृदय जरैबों
अपनैलौं श्मशानों कें,
जखनी कि हमरों गोड़ों पर
लोटै छेलै मधुशाला । ११५

कत्तें लैलों, पीलों गेलै
ई मदिरालय में हाला,
अब तां टूटी चुकलै कत्तें
मादक प्याला रों माला,
कत्तें साकी अपनों-अपनों
काम पुरैतैं दूर गेलै,
कत्तें पीयै वाला ऐलै
मतर वही छै मधुशाला । ११६

कत्तें ठोरों के यादों कें
रखें भला मादक हाला,
कत्तें हाथों के यादों कें
रखें भला पागल प्याला,
कत्तें शक्लों के यादों कें
रखें भला भोला साकी,
कत्तें पीयैवाला में छै
एक एकल्ले मधुशाला । ११७

दर-दर घूमै छेलियै जखनी
चिल्लैलें—हाला ! हाला !
कहाँ मिलै तखनी मदिरालय,
कहाँ मिलै हमरा प्याला,
मिलियो कें भी मिलबों के सुख
नै छेलै ई किस्मत में,
आबें जमी करी कें बैठलां
तें घूमै छै मधुशाला । ११८

हम्में मदिरालय रों भीतर
हमरों हाथों में प्याला,
प्याला में मदिरालय केरों
फोटू दै वाला हाला;
यही उधेड़बुनों में हमरों
जिनगी सौंसे ठो बितलै,
हम्में मधुशाला में छेलां
या हमरै में मधुशाला । ११९

केकरा नै पीयै सें नाता,
केकरा नै भाबै प्याला;
ई दुनियाँ रों मदिरालय में
किसिम-किसिम रों छै हाला,
अपनों-अपनों ढंगों सें सब
पीयै, पीबी माँतै छै;
एक्के सब रों मादक साकी
एक्के सब रों मधुशाला । १२०

ऊ हाला, जे शांत करी दें
हमरों अन्तर रों ज्वाला,
छाँही-परछाँही हमरे टा
जैमें, ऊ हमरों प्याला,
मधुशाला हौ नै, जैठां कि
मदिरा मधुर बिकाबै छै,
भेंट जहाँ मस्ती रों भेंटै
हमरों तें ऊ मधुशाला । १२१

मतवालापन लै हाला सें
तेजी देलें छी हाला,
पागलपन लै कें प्याला सें
तेजी देलें छी प्याला,
साकी सें मिली, मिली वही में
अपनै कें भूली गेलौं;
मिली मिठासे मधुशाला के
भूली गेलां मधुशाला । १२२

मदिरालय रों कुण्डी ठोकै
किस्मत रों छुच्छों प्याला,
लम्बा, ठंडा साँस भरी कें
बोलै छेलै मतवाला,
कतनी टा यौवन रों हाला
पीएँ सकलौं हम्में सब !
बंदो होलै कत्तें जल्दी
हमरों जीवन-मधुशाला !१२३

कहाँ दिखै ऊ स्वर्गिक साकी,
कहाँ दिखै सुरभित हाला,
कहाँ दिखै स्वप्निल मदिरालय,
कहाँ दिखै स्वर्णिम प्याला !
पीयैवालां मदिरा केरों
मोल कभौ की जानलकै,
फूटी चुकलै मधु रों प्याला
टूटी चुकलै मधुशाला ! १२४

अपनों युग में सबकें अनुपम
लगलों छै अपनों हाला,
अपनों युग में सबकें अद्‌भुत
लगलों छै अपनों प्याला,
तहियो बूढ़ा सें जों पुछलां
एक यही उत्तर पैलां—
आबें नै हौ पीयैवाला,
आबै नै ऊ मधुशाला ! १२५

शुद्ध करी मदिरै के आबें
नाम धरैलों छै हाला,
मीना छै 'मधुपात्र' कहाबै
'सागर' कहलाबै 'प्याला',
मौलवी, तिलक-त्रिमुण्डी पंडित
कैन्हें नी चौकै, बिचकै,
'मय-महफिल' अपनैलौं हम्में
करी कें आबें मधुशाला । १२६

कत्तें मर्म जतैलें जाय छै
घुरी-घुरी आबी हाला,
कत्तें रहस बतैलें जाय छै
घुरी-घुरी आबी प्याला,
कत्तें अरथ इशाराहै सें
जाय बतैलें छै साकी,
तहियो पीयैवाला लें छै
एक पहेली मधुशाला । १२७

जत्तें दिल के गहराई छै
ओत्तै गहरा छै प्याला,
जत्तें मन में मादकता छै
ओत्तै मादक छै हाला,
जत्तें हिरदय के भावुकता
ओत्तै सुन्नर साकी छै,
जत्तें जे छै रसिक, ओकरा
ओत्ते भावै मधुशाला । १२८

जे ठोरों कें छुऐ, करी दै
मस्त ओकरै ई हाला;
जे हाथों कें छुऐ, करी दै,
बेमत ओकरै ई प्याला;
आँख चार होतें ही हमरों
साकी सें—दीवाना ऊ;
बेमत होय कें नाँचै ऊ जे
आबौ हमरों मधुशाला । १२९

हर जिह्वा पर पैलों जैतै
हमरों ई मादक हाला,
हर हाथों में रखलों होतै
हमरों साकी रों प्याला,
हर घर में चर्चा अब होतै
हमरों मधु बिकवैया के;
हर ऐंगन में गमक उठैतै
हमरों गमगम मधुशाला । १३०

हमरों हाला में पैलें छै
सब अपनों-अपनों हाला,
हमरों प्याला में पैलें छै
सब अपनों-अपनों प्याला,
हमरे साकी में सब्भै नें
अपनों ठो साकी देखै;
जेकरों जेन्हों सच, होने ठो
देखलकै वैं मधुशाला । १३१

लोर छिकै ई मदिरालय रों,
नै, नै ई मादक हाला;
आँख छिकै ई मदिरालय रों
नै, नै, नै, मधु रों प्याला;
कोय काल रों याद सुखद ई
साकी बनी कें नाँचै छै;
नै, नै, कवि रों हृदय-ऐंगनों
ई विरहाकुल मधुशाला । १३२

कुचली अपनों कत्तें हसरत
हाय बनैलें छी हाला,
खाक करी अरमानो कत्तें
सुनों बनैलें छी प्याला !
पीबी पीयैवाला जैतै
पता नै चलतै केकराहौ,
कत्तें मन रों महल ढहै, तें
खड़ा हुऐ ई मधुशाला । १३३

विश्व, विषैलों तोरों जिनगी
में लानै छै जों हाला,
कटियो टा भी मोंद मतैलों
ई हमरी साकीबाला,
तोरों सुन्नों पल कें कुछुवो
जो गुंजित ई कै दै छै,
सुफल समझतै जिनगी अपनों
जग में हमरों मधुशाला । १३४

कत्तें नाजों सें पोसलें छी
हम्में ई साकीबाला,
ललित कल्पनै केरों यैनें
सदा उठैनें छै प्याला,
मान-दुलारों सें ही रखियों
ई हमरी सुकुमारी कें;
विश्व तोरों हाथों में आबें
सौंपी रहलौं मधुशाला । १३५

परिशिष्ट

खुद तें नै पीयौं, दुसरा कें
मतर पिलाबै छी हाला,
खुद तें नै छूवौं, दुसरा के
पर पकड़ाबै छी प्याला,
पर उपदेश कुशल बहुतेरों
सें सिखलें छी ई हम्में,
खुद तें नै पहुँचौं; दुसरा कें
पर पहुँचाबौं मधुशाला । १

हम्में कैथ कुलों सें ऐलौं
पुरखा मय रों मतवाला,
हमरों देहों के लेहू में
पचहत्तर प्रतिशत हाला,
पुश्तैनी अधिकार ई हमरा
मदिरालय रों ऐंगन पर;
हमरो दादा-परदादा के
हाथ बिकैलै मधुशाला । २

कत्तें के सिर चार दिनों तांय
चढ़ी उतरलों छै हाला,
कत्तें के हाथों में दू दिन
छलकी खलियैलै प्याला,
मतर सुरा के असर बढ़ै छै
साथ समय के, एकरौ सें
खूब पुरानों होय कें हमरों
खूब नशीला मधुशाला । ३

पितर-पक्ष में पूत उठैयों
भले अर्घ्य नै, पर प्याला,
कहूँ गांग पर बैठी रहियों
'सागर' में भरलें हाला;
कोय जघों रों मिट्टी भींगें
पाबी लेबों तृप्ति कें
अर्पण-तर्पण करियों हमरा
पढ़ी-पढ़ी कें 'मधुशाला' । ४

■■

डॉ. अमरेन्द्र द्वारा संपादित **सत्यावर्त्त** के कथा-विशेषांक पर हरिवंश राय बच्चन की प्रतिक्रिया, जो १९७६ में भेजी गई थी

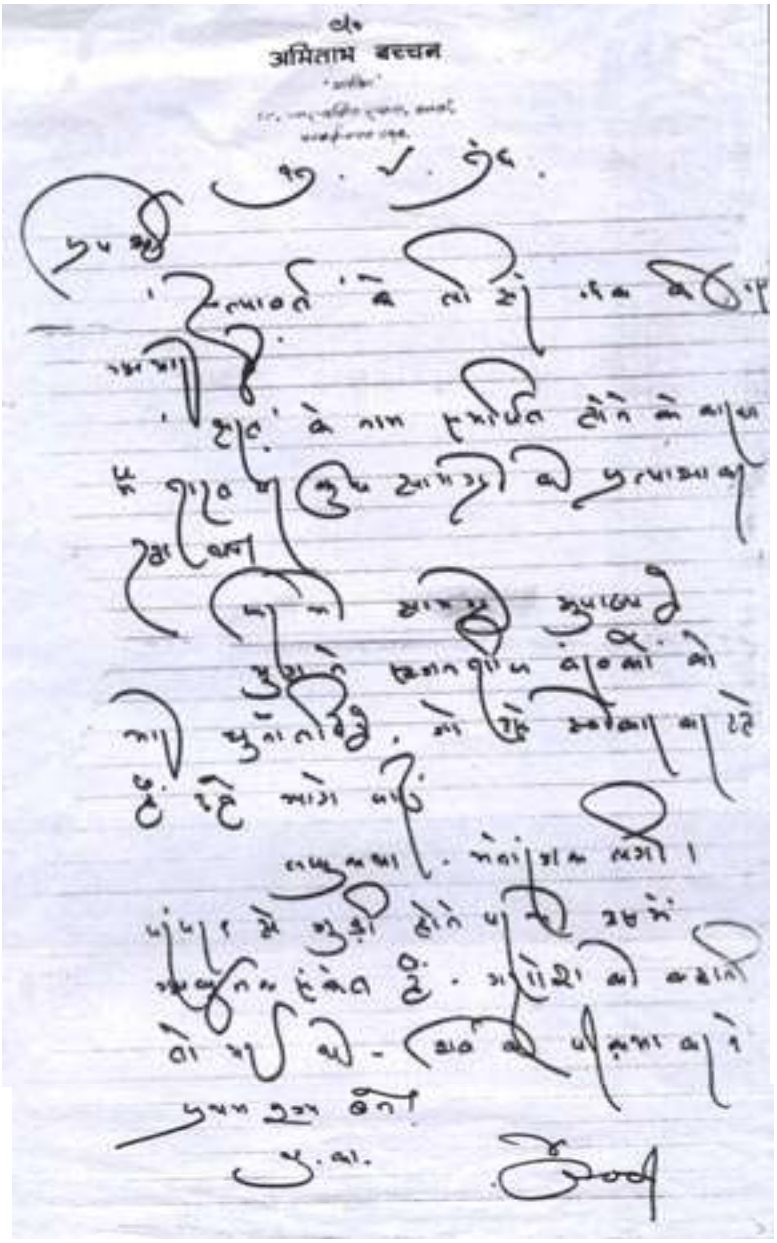

डॉ. अमरेन्द्र : संक्षिप्त जीवन-परिचय

पूरा नाम : डॉ. अमरेन्द्र कुमार सिन्हा
जन्म : ५ जनवरी १९४९
जन्मस्थान : ग्राम रूपसा । थाना, रजौन । जिला, भागलपुर (अब बांका), बिहार
शिक्षा : बी. ए. (प्रतिष्ठा), एम. ए. (हिन्दी), पी.एच. डी.

प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें	प्रकाशक
१. सूरज के पार (गजलें)	सहयोगी प्रकाशन, भागलपुर/१९८१
२. जनतंत्र का 'विक्रमशिला' (कविताएं)	समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९८१
३. पीर का पर्वत पुकारे (गजलें)	समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९८४
४. देहरी पर दीया (नवगीत)	समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९८६
५. मन गोकुल का गाँव (गीत)	मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/२००३
६. द्वार के पार (गजलें)	मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/२००३
७. काव्य और कसौटी (आलोचना)	एच० के० प्रकाशन, दिल्ली/२००४
८. भाषा और साहित्य (आलोचना)	मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/२००५
९. काँटे कुछ कचनार (कविता-संग्रह)	मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/२००५
१०. शब्द साधक और साहित्य (आलोचनात्मक निबंध)	अंगिका फॉउन्डेशन, दिल्ली/२००८
११. संस्कृति और साहित्य (आलोचनात्मक निबंध)	अंगिका फॉउन्डेशन, दिल्ली/२००८
१२. सलेश भगत (उपन्यास)	अंगिका संसद, भागलपुर/२००९
१३. अमृतदेश अंगप्रदेश (रेडियो नाटक	समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/२०१२
१४. दीपक मेघ हिण्डोल (गीत-संग्रह)	समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/२०१२
१५. आलाप संलाप (हिन्दी प्रबन्ध)	समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/२०१३
१६. गेना (हिन्दी प्रबन्ध काव्य)	समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/२०१३
१७. वेणुवंशी (लघु प्रबन्ध काव्य)	समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/२०१३

प्रकाशित अंगिका पुस्तकें	प्रकाशक
१८. करिया झुम्मर खेलै छी (कविताएं)	शेखर प्रकाशन, पटना/१९८२
१९. गेना (प्रबन्ध-काव्य)	समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९८९
२०. अंगदेव (प्रबन्ध-काव्य)	समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९९४
२१. ढोल बजै छै ढम्मक ढम (बाल-गीत)	समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९९४
२२. पंचगव्य (एकांकी-संग्रह),	अंगिका संसद, भागलपुर/१९९७
२३. जटायु (उपन्यास) 'नई बात' में धारावाहिक प्रकाशित	मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/१९९७
२४. अंगिका छन्द-छौनी (छन्द-विवेचन)	अंगिका संसद, भागलपुर/१९९७
२५. छन्द-मौनी (अंगिका छन्द-विवेचन)	अंगिका संसद, भागलपुर/१९९७
२६. गजल रो ँ पिंगल (फारसी-संस्कृत-हिन्दी छन्द-विवेचन)	अंगिका संसद, भागलपुर/१९९७
२७. अंगिका साहित्य रो ँ इतिहास (गद्य-भाग)	हिन्दी अकादमी, हैदराबाद/१९९८

२८. दुपल्लो (प्रेमचन्द की कहानियों का नाट्य रूपान्तर) अंगिका संसद, भागलपुर/१९९९
२९. बुतरू के तुतरू (बाल-गीत) अंगिका संसद, भागलपुर/१९९९
३०. रेत रों राग (गजलें) अंगिका संसद, भागलपुर/१९९९
३१. ऋतुरंग (गीत-संकलन) अंगिका संसद, भागलपुर/२०००
३२. कुइयाँ में काँटों (नवगीत, पद, दोहे, सोनेट) अंगिका संसद, भागलपुर/२००४
३३. बाजै बीन बजावै तीन (बालगीत) अंगिका संसद, भागलपुर/२००५
३४. एक छड़ी पर अंडा नाचै (बुझौव्वल) अंगिका संसद, भागलपुर/२००५
३५. बण्टा (उपन्यास) अंगिका संसद, भागलपुर/२००६
३६. घटोत्कच (बाल खण्ड काव्य) 'नई बात' (१३ नवम्बर २०११) में प्रकाशित
३७. शबरी (अंगिका खण्डकाव्य) स. स. अं. वि. सं. भागलपुर/२०१३

सम्पादित हिन्दी पुस्तकें — प्रकाशक

३८. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियाँ समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९९२
३९. शब्द बनते बिम्ब (कविताएं) कामायनी, भागलपुर/१९९८
४०. शताब्दी के साहित्यकार : कमला प्रसाद बेखबर राठौर प्रकाशन, कोलकाता/१९९९
४१. ग्यानूड़ी (सदाशिव सुगन्ध की प्रतिनिधि कहानियाँ) हंस पब्लिकेशन, भागलपुर/२०००
४२. सुरंग में सूरज (हिन्दी कहानियाँ) प्रथम प्रकाशन गृह, दिल्ली/२००२
४३. गुरेश मोहन घोष सरल : व्यक्तित्व और कृतित्व प्रथम प्रकाशन गृह, दिल्ली/२००२
४४. नीली झील की आँखें (हिन्दी कहानियाँ) मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/२००३
४५. पुल (जसवन्त सिंह विरदी की कहानियाँ) कामायनी, भागलपुर/२००३
४६. तूफान में फूल (जसवन्त सिंह विरदी की कहानियाँ) एच. के. प्रकाशन/२००३
४७. माँ को लिखा पत्र (जसवन्त सिंह विरदी की कहानियाँ) मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/२००४
४८. सात सुरों का देश (सं. काव्य संग्रह) समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/२०१३

सम्पादित अंगिका पुस्तकें — प्रकाशक

४९. गीत-गंगा समय साहित्य सम्मेलन, बाँका/१९९४
५०. सात समुन्दर साथ (कविताएं) अंगिका संसद, भागलपुर/१९९५
५१. अंगिका कहानी अंगिका संसद, भागलपुर/१९९७
५२. आठ समुन्दर आँख (कविताएँ) अंगिका संसद, भागलपुर/१९९८

अनुवाद साहित्य — प्रकाशक

५३. साँप (अंगिका नाटक का हिन्दी रूपान्तर) समय साहित्य सम्मेलन, बाँका
५४. मन रों मनका (अंगिका कविताओं का हिन्दी रूपांतर) /२००२
५५. कोशी के तीरें-तीरें मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली/२००५
५६. फैसल रों जासूसी (बाल उपन्यास) उर्दू से अंगिका एजुक्रेशनल पब्लिक्रेशन्स, दिल्ली/२००९
५७. शिकार आरो शिकारी (उर्दू से अंगिका) एजुक्रेशनल पब्लिक्रेशन्स, दिल्ली/२००९
५८. जंगल रों पहचान (बाल उपन्यास) उर्दू से अंगिका निराली दुनिया पब्लि., दिल्ली/२००९

५९. जंगल में सूर्यास्त (डॉ. रामनिवास मानव की हिन्दी कविताओं का अंगिका अनुवाद)	अमित प्रकाशन, गाजियाबाद/२००९
६०. मधुशाला (हरिवंश राय बच्चन-कृत काव्य का अंगिका अनुवाद)	मैग्निफिसेण्ट न्यूज, पटना (मार्च २०१०-२०१२) में धारावाहिक रूप से प्रकाशित

यंत्रस्थ कृतियाँ

६१. काव्यभाषा (संपादित हिन्दी काव्य)
६२. नदी-नदी रौद (अनुवादित कविता संग्रह)

दर्जनों महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में कविताएँ/कहानियाँ भी प्रकाशित ।

पत्र-पत्रिकाएं, जिनमें रचनाएं प्रकाशित हुई हैं :

चन्द्रकिरण, सृजन, माधुरी, आजकल, वनफूल, प्रगतिशील समाज, आरोह, मेरी सहेली, सूरज, जागृति, शैली, सरोकार, संकल्प-रथ, बालहंस, बच्चों का देश, नवनीत, कादम्बिनी, अग्नि-पुष्प, साहित्य अमृत, देवघर विद्यापीठ पत्रिका, गणगोर राजहंस, साहित्य सरोवर, आकण्ठ, कंचनलता, साहित्य भारती, मंगल ज्योति, छपते-छपते, (विशेषांक), संदर्भ, संकल्प, उलूपी, हिमालिनी, नई गजल, युगीन, विवरण पत्रिका, उमंग, संग्रथन, सरोपमा, मयूराक्षी, कोहसार (उर्दू), गुलबन (उर्दू), लूर, लोकगंगा, देवघर विद्यापीठ पत्रिका, नई धारा, प्रगति वार्ता, अभिनव इमरोज, समय, किस्सा, संभाव्य, परिषद् पत्रिका, समाख्या, नव भारत टाइम्स, पांचजन्य, विश्वमित्र, नई बात, आज, जनसत्ता, हिंदुस्तान, पाटलीपुत्र, अंगसत्ता, प्रभात खबर, समरक्षेत्र, नव विहार, आवाज, नवां जमाना (पंजाबी), दैनिक जागरण में कहानियां, फीचर, कविताएं प्रकाशित ।

प्रसारित नाट्य साहित्य — प्रसारण वर्ष

१. अंगिका अंग लगैवै (अंगिका रूपक)	१९८१
२. शैलेष भगत (नाटक)	१ सितम्बर १९८२
३. मधुसूदन का मन्दार (रूपक)	२४ फरवरी १९८४
४. वापसी (नाटक)	३१ अगस्त १९८४
५. घर-बाहर (चार हास्य नाटिकाएँ)	९/१६/२३/३० मार्च १९८६
६. आषाढ़, धरती की पूजा (रूपक)	१० जून १९८७
७. बीच वैतरणी में	१७ अक्टूबर १९८७
८. अन्धेरी घाटी की सूरजमुखी	५ जून १९८८
९. कथाकार सम्राट मुंशी प्रेमचन्द (रूपक)	३१ जुलाई १९८८
१०. सरदार लहना सिंह (नाट्य रूपान्तर)	७ अगस्त १९८९
११. यशोधरा (गुप्त के काव्य 'यशोधरा' का नाट्य रूपान्तर)	३० मार्च १९९०
१२. महामानव मालवीयजी महाराज (रूपक)	११ मई १९९०
१३. नारी तुम केवल श्रद्धा हो ('कामायनी' का नाट्य रूपान्तर)	१८ नवम्बर १९९०

१४. पूस की रात (प्रेमचन्द की कहानी का अंगिका नाट्य रूपान्तर) फरवरी १९९२
१५. सम्राट शहीद महेन्द्र गोप (रूपक) १४ मई १९९२
१६. आकाशदीप (प्रसाद की कहानी का नाट्य रूपान्तर) १ मार्च १९९५
१७. सत्तावन का शेर (नाटक) २ अगस्त १९९६
१८. उसका महाभारत (हास्य नाटिका) २९ अप्रैल १९९७
१९. उगते सूरज का सफर (रूपक) २१ नवम्बर १९९९
२०. रास्ते और भी हैं (नाटिका) फरवरी २०००
२१. मौनसून मेघ दे ३० जुलाई २०००
२२. गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी (व्यंग्य.नाटक) ३० जनवरी २००१
२३. या नारी सर्वभूतेषु (रूपक) २९ अक्टूबर २००२
२४. मैं मोक्षद मंदार (रूपक) ३१ जनवरी २००३
२५. भवप्रीतानन्द ओझा (रूपक) २३ मार्च २००४
२६. नरसिंह बाबू (अंगिका नाटक) १० अप्रैल २००४
२७. रूद्रावतार (भाषान्तरित गीति नाट्य) १८ जून २००५
२८. बुद्धं शरणं गच्छामि (रूपक) १३ मई २००६
२९. सिंहासन का सन्यास (नाटक) १ अगस्त २००७
३०. अंग देश का अमृत मंथन (तेरह खण्डों का फीचर) १ फरवरी २०११ से २४ मई २०११
३१. फुलवा कटोरवा (नाटक) २४ अप्रैल २०१२
३२. दरसो, परसो, घन बरसो (रूपक) १० जुलाई २०१२
३३. सुरंग का सूरज (नाटक) १० अगस्त २०१२
३४. अमृतदेश : अंगप्रदेश (नाट्य रूपक) राष्ट्रीय प्रसारण कार्यक्रम २७ अक्तूबर २०१२
३५. ॐ श्री चित्रगुप्ताय नमः (नाटक) १३ नवम्बर २०१२

डॉ. अमरेन्द्र पर स्वीकृत शोध-प्रारूप

१. ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग द्वारा पी. एच्-डी. हेतु 'डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर शोध-प्रारूप स्वीकृत/शोधार्थी—श्वेता रानी
२. सिदो-कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय दुमका (झारखण्ड) के एस. बी. एस. एस. पी. एस. जनजातिय महाविद्यालय पथरगामा गोड्डा द्वारा पी. एच्-डी. हेतु 'डॉ. अमरेन्द्र के काव्य में समकालीन यथार्थ' विषय पर शोध-प्रारूप स्वीकृत/शोधार्थी—ब्रह्मदेव कुमार
३. द्रविड़ियन विश्वविद्यालय, कुप्पम (आं. प्र.) के पी. एच्-डी. हेतु 'डॉ. अमरेन्द्र का हिन्दी-अंगिका साहित्य : परिचय एवं मूल्यांकन' विषय पर शोध-प्रारूप स्वीकृत/शोधार्थी—सुनीता नैन
४. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा, चेननई के पी. एच्-डी. हेतु 'डॉ. अमरेन्द्र के काव्य की मीमांसा' विषय पर शोध-प्रारूप स्वीकृत/शोधार्थी—जनार्दन यादव